ISSN:2583-8849



रतन कानावत

जोधपुर, राजस्थान

फ़ोटोग्राफ़

अधूरे आकाश को
पार करता एक पक्षी,
साँझ की आख़िरी ऊष्मा को
अपनी हथेलियों में समेटे
एक बूढ़े के हाथ,
और वह बच्चा
जो हँस रहा है
इससे पहले कि दुनिया
उसे दुख का अर्थ सिखाए

इनमें से कोई भी
अमर होना नहीं चाहता।
कैमरा,
अपनी एकमात्र
अविचल आँख से,
साधारण को
विस्मृति की अथाह बाढ़ से
बचा लेता है।

समय
एक धैर्यवान चोर है।
वह पहले नाम चुराता है,
फिर आवाज़ें,
फिर उन गलियों से
बारिश की गंध,
जिन्हें कभी
हम अपना घर कहते थे।

केवल फ़ोटोग्राफ़
समय से बहस करता रहता है।
वह कहता है
नहीं।

यह छाया सचमुच थी।
इस हवा ने
एक चेहरे को छुआ था।
इस मौन का भी
एक रंग था।
यह क्षण
साँस लेता था।

शायद
फ़ोटोग्राफ़
एक अनुत्तरित प्रार्थना है
लुप्त हो जाने के विरुद्ध
एक छोटा-सा प्रतिरोध।
आख़िर कला क्या है,

यदि यह साहस नहीं
कि हम इस गुज़रती हुई दुनिया से कह
सकें
ठहरो।
बस
एक बार और।